लोकमत समाचार • अपना नागपुर
नागपुर, मंगलवार, 14 नवंबर 2017 3

बाल दिवस विशेष

यदि हम स्थायी शांति स्थापित करना चाहते हैं तो हमें बच्चों के साथ शुरुआत करनी होगी. **महात्मा गांधी**

बच्चों को ये सिखाना चाहिए कि कैसे सोचें, न कि क्या सोचें. **मार्गरेट मीड**

बच्चों को शिक्षा से जोड़ रही है 'फुटपाथ शाला'

आशीष दुबे
नागपुर। 13 नवंबर

हर मां-बाप का सपना होता है कि उनके बच्चे को अच्छी शिक्षा मिले. वह अपने पैरों पर खड़ा होकर एक कामयाब इंसान बने. यह सपना उन माता-पिता का भी होता है जिनका जीवन फुटपाथ पर ही गुजर रहा है. माली हालत की वजह से वे अपने सपने को हकीकत में बदलने में खुद

लोकमत समाचार एक्सक्लूसिव

को लाचार पाते है. दिन ब दिन महंगी होती शिक्षा का खर्च वहन करने की उनकी क्षमता नहीं है. ऐसे पालकों के सपनों को साकार करने में जुटी है 'फुटपाथ शाला'.

यह शाला आम पाठशालाओं से अलग है. यहां पढ़ाने आने वाले शिक्षक भी अन्य स्कूलों के शिक्षकों से अलग हैं. कोई सरकारी सेवा में है, कुछ ऐसे है जो सरकारी सेवा से सेवानिवृत्त हो चुके हैं. कुछ ऐसे है जो इस समय किसी उच्च शिक्षण संस्थान में शिक्षा हासिल कर रहे हैं. आम पाठशाला की तरह ही 'फुटपाथ शाला' की शिक्षण प्रणाली व उद्देश्य बच्चों को बेहतर शिक्षा प्रदान करना और उनका सर्वांगीण विकास करना है, ताकि बच्चे आगे चलकर जीवन में एक कामयाब इंसान बन सकें. 'फुटपाथ शाला' की नींव कुछ वर्ष पहले एनटीपीसी के मौदा प्रोजेक्ट में पड़ी थी. यहां कार्यरत एक अभियंता वरुण श्रीवास्तव ने इसे शुरु किया था. इसके तहत वे प्रोजेक्ट में काम करने वाले मजदूरों के बच्चों को पढाते थे.

दो साल पहले नागपुर में यह प्रयोग किया गया, जो कि सफल रहा. आज 'फुटपाथ शाला' की सदर, लक्ष्मीनगर, काटोल रोड, संतरा मार्केट समेत शहर के अलग-अलग इलाकों में 8 शाखाएं हैं. नागपुर में पाठशाला का संचालन शहर की एक स्वयंसेवी संस्था 'उपाय' कर रही है.

संस्था का कामकाज जे.के. अग्रवाल संभालते है. अग्रवाल एक बहुराष्ट्रीय पॉवर कंपनी के सेवानिवृत्त इंजीनियर हैं. वे खुद पाठशाला में बच्चों को गणित व अंग्रेजी विषय पढाते हैं. उन्होंने बताया कि 'फुटपाथ शाला' बिना किसी सरकारी मदद के चलता है. यहां बच्चों को पढ़ाने के लिए कई लोग आते है. उनमें कुछ ऐसे है जो इस समय शासकीय सेवा में हैं. कुछ कॉलेज के विद्यार्थी हैं. रोजाना ये शाम को समय निकालकर फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों को पढ़ाने के लिए आते है.

छाया : शाहरुख खान
महाराजबाग रोड पर फुटपाथ पर रहने वाले बच्चों के लिए चलाई जाने वाली 'फुटपाथ पाठशाला' में पढाते शिक्षक.

स्कूल क्या होता है नहीं पता

'फुटपाथ पाठशाला' में कई ऐसे बच्चे भी पढ़ते है जो दूसरे बच्चों की तरह स्कूल जाना चाहते है. अच्छी शिक्षा हासिल करना चाहते है. लेकिन परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति के चलते स्कूल जाने की बजाय सड़क पर खिलौने बेचने को मजबूर है. महाराजबाग रोड पर लगने वाली 'फुटपाथ पाठशाला' में पढ़ने वाले अजय व शिवलाल भी इनमें से एक है. इन दोनों नहीं पता कि स्कूल क्या होता है. अजय ने कहा कि 'फुटपाथ पाठशाला' मन के मलाल को दूर कर दिया. स्कूल नहीं जाने वाले शिवलाल ने बताया भले वे स्कूल नहीं जाते. लेकिन उन्हें सब आता है. गणित, अंग्रेजी व हि का अच्छा ज्ञान हो गया है.

सरकार की योजनाएं कोसों दूर

अनिवार्य शिक्षा कानून के तहत केंद्र व राज्य सरकार ने कई योजनाएं बनाई है. लेकिन यह सारी योजनाएं इन बच्चों से कोसों दूर है. किसी भी योजना का फायदा इन बच्चों तक नहीं पहुंच पाया है. महाराजबाग रोड पर चलने वाली 'फुटपाथ पाठशाला' की इंचार्ज किरण ने बताया कि इन बच्चों को किसी तरह की कोई कमी नहीं हो, इसका विशेष ध्यान रखा जाता है. कई स्वयंसेवी संस्थाओं व नागरिकों से सहयोग मिलता है.

रोजाना सड़क से गुज हुए देखते थे

टाउन प्लानिंग विभाग में इ राजेंद्र लेले दफ्तर से छुट्टी बाद रोजाना महाराजबाग घर जाते थे. वे फुटपाथ पा बच्चों को पढ़ते देखते थे. काम इतना पसंद आया कि भी दफ्तर से घर जाने के पाठशाला में आकर बच्चों है. वे बताते है कि पाठ व 9वीं में पढ़ने वाले वि जिन्हें वे अंग्रेजी विषय इन बच्चों को पढ़ाने सुखद अनुभूति होती

अदभुत प्रतिभा के दम पर रोशन कर रहे नागपुर का नाम

... खेल व साहित्य आदि क्षेत्रों में शहर का नाम रोशन कर रहे है. कुछ ऐसे भी विद्यार्थी है जो मौजूदा पर्यावरण व ...

बच्चों की मदद के